1 जुलाई, 2010 को 11.30 बजे गांधी मेमोरियल लेप्रोसी फाउंडेशन, वर्धा में अंतर्राष्ट्रीय गांधी पुरस्कार, 2009 प्रदान करने के अवसर पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

वर्धा में आज के कार्यक्रम में भाग लेने को मैं अपना सौभाग्य समझता हूं और मेरे लिए यह तीर्थ यात्रा के समान है। यह शहर स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान हुई महत्त्वपूर्ण व ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी रहा है और तदुपरांत सेवा, बलिदान और करूणा के गांधीवादी मूल्यों को सर्वोपरि रखने वाले व्यक्तियों के लिए यह एक तीर्थ-स्थल बन गया है। यह इस शहर की मेरी प्रथम यात्रा है और अंतर्राष्ट्रीय गांधी पुरस्कार प्रदान करने के लिए यहां मौजूद होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

इस वर्ष इन पुरस्कारों के विजेता, डॉ विजय कुमार पन्निकर और विदर्भ महारोगी सेवा मंडल का प्रतिनिधित्व कर रहे इसके अध्यक्ष डॉ मोतीलाल राठी कुष्ठ रोग उन्मूलन के अपने अथक प्रयासों और कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों के प्रति कई दशकों से अपनी सेवा के कारण हमारी प्रशंसा के पात्र हैं।

इनके प्रयासों के फलस्वरूप अनेक कुष्ठ प्रभावित व्यक्तियों के जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है और समाज में उनके पुनर्वास व पुनर्स्थापन में मदद मिली है। अंतर्राष्ट्रीय गांधी पुरस्कार समिति की ओर से, और अपनी ओर से, मैं पुरस्कार विजेताओं को बधाई देता हूं और उनसे आग्रह करता हूं कि वे अपना अच्छा कार्य जारी रखें।

एक रोग के रूप में, कुष्ठ रोग ने 2000 से अधिक वर्षों से मानव को त्रस्त किया है, जिसका उल्लेख ईसा पूर्व लगभग 600 वर्ष के प्राचीन भारतीय साहित्य में मिलता है। लेकिन 1950 के दशक तक इस रोग और इसके उपचार की विधियों के बारे में अल्प ज्ञान के कारण, यह मनुष्यजाति के लिए एक रहस्य बना रहा।

तथापि, चिकित्सीय अज्ञानता ने इसके सामाजिक कलंक को नहीं धोया। कुष्ठ रोग को एक दैवी कोप तथा अनैतिक व्यवहार का नतीजा समझा गया और 'कुष्ठ रोगी' को एक ऐसा व्यक्ति समझा गया जो शारीरिक व नैतिक रूप से मलिन, रोग के संक्रमण का दोषी और इस कारण बहिष्कृत किए जाने लायक है।

महात्मा गांधी कुष्ठ रोगियों के लिए गहरी चिंता रखते थे, और तब जबकि कुष्ठ रोग का कोई खास इलाज नहीं था। वह जानते थे कि इस रोग के दो पहलू हैं - पहला, चिकित्सीय आयाम और दूसरा, सामाजिक आयाम। उन्होंने इस रोग से जुड़े सामाजिक कलंक को समाप्त करने और कुष्ठ रोगियों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य किया।

1980 के दशक के पूर्वार्द्ध में बहु-औषधीय चिकित्सा के प्रारंभ होने से इस रोग का परिदृश्य ही बदल गया। इससे 13 मिलियन से अधिक कुष्ठ रोगी ठीक हुए और देश में इस रोग की व्याप्तता दर 1983 की प्रति दस हजार की जनसंख्या पर लगभग 150 से कम होकर आज प्रति दस हजार की जनसंख्या पर 1 से भी कम रह गई है। 2005 के अंत तक भारत ने राष्ट्रीय स्तर पर जन स्वास्थ्य समस्या के रूप में कुष्ठ रोग को समाप्त करने के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया था।

फिर भी, यह स्मरण रखना अब भी महत्वपूर्ण है कि हम इस रोग का उन्मूलन नहीं कर पाए हैं। बिहार और छतीसगढ़ जैसे राज्यों तथा दादर और नगर हवेली संघ राज्यक्षेत्र में इसकी व्याप्तता दर प्रति दस हजार की जनसंख्या पर 1 से अधिक है और ये राज्य इस रोग को समाप्त

करने का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाये हैं। देश की 10 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या इन्हीं राज्यों में वास करती है और देश में इस रोग के दर्ज मामलों का लगभग पांचवां हिस्सा इन्हीं राज्यों में है।

यदि जिला स्तर पर विश्लेषण किया जाये, तो पता चलता है कि 80 प्रतिशत जिले ऐसे हैं जहां कुष्ठ रोग समाप्त हो चुका है जबकि 15 प्रतिशत जिलों में इसकी सामान्य व्याप्तता प्रति दस हजार की जनसंख्या पर 1 से 2 के बीच है और हमारे 4 प्रतिशत जिले ऐसे हैं जहां इसकी प्रचंड व्याप्तता प्रति दस हजार की जनसंख्या पर 2 से 5 के बीच है। यह महत्वपूर्ण बात है कि इस रोग को समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय प्रयास जारी हैं और भौगोलिक रूप से इन्हीं क्षेत्रों पर अधिक केन्द्रित हैं।

कुष्ठ रोग की समाप्ति के युग के पश्चात् हमें भयावह चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। पूरे विश्व में दर्ज कुष्ठ रोगियों के नए मामलों की आधी से ज्यादा संख्या अब भी भारत में है। अनुमान है कि देश में लगभग एक मिलियन कुष्ठ रोगी ऐसे हैं जो अशक्त हैं। हमें कुष्ठ रोग के बोझ को और कम करने, अशक्तता एवं विरूपता का निवारण करने, इस रोग के कारण अशक्त हुए लोगों को सशक्त करने तथा पक्ष-समर्थन एवं लक्षित जागरूकता अभियान के माध्यम से सामाजिक भेदभाव को कम करने की आवश्यकता है।

देवियो और सज्जनो,

बापूजी का जीवन ही उनका संदेश था। कुष्ठ रोग से प्रभावित लोगों की सेवा करने का उनका व्यक्तिगत उदाहरण और उन्हें सामान्य सामुदायिक जीवन के साथ जोड़ने के उनके प्रयासों से इस रोग के साथ जुड़े सामाजिक कलंक को समाप्त करने तथा कुष्ठ रोग के संबंध में देश भर में जागरूकता फैलाने का महत्व उजागर हुआ।

जहां एक ओर सरकार और सभ्य समाज ने इस कार्य को अपने जिम्मे लिया है, मुझे लगता है कि प्रत्येक नागरिक पर ध्यान देने की गांधीजी की विचारधारा का सहारा लेना अत्यधिक उपयुक्त होगा। हम में से प्रत्येक को अपने क्षेत्र में कुष्ठ रोग के बारे में और अधिक जागरूक होना चाहिए तथा सामाजिक भेदभाव को दूर करने और कुष्ठ रोग से प्रभावित लोगों के सामाजिक एकीकरण के लिए सक्रिय कदम उठाने चाहिए।

मैं डा. विजय कुमार पन्निकर और विदर्भ महारोगी सेवा मंडल एवं इसके अध्यक्ष, डा. मोतीलाल राठी को पुन: बधाई देता हूं।

मैं श्री वी. प्रभाकर राव तथा गांधी मेमोरियल लेप्रोसी फाउंडेशन को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में मुझे आमंत्रित किया। इसके साथ ही मैं उनके नेक उद्यम की पूर्ण सफलता की कामना भी करता हूं।